# तुलनात्मक साहित्य : एक सैद्धान्तिक समीक्षा

**Dr. K. M. Trivedi**
Associate Professor in Hindi
Smt. B. V. Dhanak College,
Bagasara

'साहित्य' का व्युत्पत्ति की दृष्टि से अर्थ होता है, सहित होने का भाव । साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। अतः साहित्य जीवन की व्याख्या करता है। इससे उसमें जीवन देने की शक्ति आती है। वह सामाजिक समस्याओं, विचारों तथा भावनाओं में स्पष्ट होता है, वहाँ वह उनसे स्वयं भी प्रभावित होता है। "साहित्य और समाज का सम्बन्ध साहित्य के उदयकाल से ही चला आ रहा है। वाल्मीकि और तुलसीदास ने भी एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था का चित्रण अपने साहित्य में किया था।"[१] कवि वास्तव में समाज की व्यवस्था, वातावरण, धर्म-कर्म, रीति-नीति एवं सामाजिक शिष्टाचार से ही अपने काव्य के उपकरण चुनता है और उनका प्रतिपादन अपने आदर्शों के अनुरूप ही करता है। "साहित्य बड़ा ही व्यापक अर्थ रखनेवाला एक महान गौरवपूर्ण शब्द है। यह विश्वजनीन भाव का द्योतक है। विश्वबन्धुत्व का सन्देशवाहक है, देश और जाति के जीवन का रस है। समाज की आन्तिरक दशा का दिव्य दर्पण है, सभ्यता और संस्कृति का संरक्षक है।"[२]

साहित्य ईश्वर के विराट रूप के समान विश्व की समस्त विभूतियों का आश्रय-स्थल है। दृश्यमान जगत् के समग्र वैभवों की निधि तो यह है ही, अदृश्य लोकों की सम्पदा का भी कुबेर यही है। लौकिक और अलौकिक, सब कुछ इसी के भण्डार में है। ऐसा यह सर्वशक्ति सम्पन्न है। किसी राष्ट्र या जाति में संजीवनी शक्ति भरनेवाला साहित्य ही है। इसलिए यह सर्वता भावेन संरक्षणीय है। साहित्य ही ने भगवान को भी भक्तों के मानस-मन्दिर में प्रतिष्ठित् किया है। कुल मिलाकर कहें तो साहित्य समाज की संजीवनी है। जो सदैव सभी के लिए उपकारक सिद्ध हुई है।

**तुलनात्मक साहित्य : अर्थ एवं स्वरूप :**

तुलनात्मक अध्ययन और तुलनात्मक साहित्य दोनों पदों में मूलत: भेद है। यों अंग्रेजी में "कम्पैरेटिव लिटरेचर" पद का प्रयोग प्रचलित है और इसीको देखकर हिन्दी में 'तुलनात्मक साहित्य' का प्रचलन हुआ है। तुलनात्मक साहित्य के विषय में एक स्वतंत्र अध्ययन को मान्यता देना आज का विवादग्रस्त विषय है। तुलनात्मक साहित्य का भी एक दृष्टिकोण है, एक प्रविधि है। तुलनात्मक शब्द 'COMPARE' का अनुवाद है। तुलनात्मक अध्ययन ही आज तुलनात्मक अनुसंधान का रूप ले चुका है। अर्थतत्व की दृष्टि से तीन शब्द है तुलना, अध्ययन व अनुसंधान। "यदि हम 'तुलना' शब्द की व्यावहारिक व्याख्या करें तो पहले हम दो व्यक्ति, दो ग्रंथों या दो युगीन प्रवृत्तियों के आधार पर साम्य-वैषम्य व तारतम्य निश्चित कर लेते हैं। कभी-कभी दो तुल्यमान में से एक की अपेक्षा दूसरा प्रधान हो जाता है।"[३]

प्रकृति का यह नियम है कि कोई भी दो वस्तुएँ ठीक एक ही प्रकार की नहीं हो सकती। कुछ-न-कुछ अंतर तो अवश्य ही होगा। इसी प्रकार कोई भी दो एकदम इतनी अभिन्न भी नहीं होती कि उनमें कोई-न-कोई समानता ही न मिल सके। तुलनात्मक साहित्य हमेशा नई दिशाओं में अग्रसर होता रहता है। यह अंतरविद्यावर्ती शाखा है। हमारे देश की बहुभाषिकता के कारण भी हमारे लिए तुलनात्मक साहित्य महत्त्वपूर्ण बनता जा रहा है।

उपरोक्त से तात्पर्य यह होता है कि "तुलना शब्द का प्रयोग व्यवहारिक जगत में तौलना, गिनना, जोड़ना है। साम्य भेद की पहचान आदि अर्थों तक प्रयुक्त था। अपने आरंभिक स्वरूप में साहित्य के क्षेत्र में इसका प्रयोग नगण्य-सा था। जैसे-जैसे संस्कृतियों का विचार विनिमय बढ़ा, उसमें विस्तार से विकृति भी आई। फलतः साहित्यिक लेन-देन की प्रक्रिया बढ़ी।"[४] संचार साधन में प्रचुरता आई और काल परिवर्तन के साथ तुलना के मापदण्ड भी परिवर्तित होते रहे। सम्प्रति अज्ञानात्मक संपर्क विस्तार के कारण तुलना प्रक्रिया में क्षिप्र प्रवाह आया। किन्तु बहुधा पश्चिम में भी तुलनात्मक साहित्य पूर्ण साहित्य से अछूत रहा। नाना प्रकार की कलाशाखा तथा मानवीय समूह गन उपेक्षित थे, जिसे जागतिक ध्रुवीकरण में महत्त्व दिया जा रहा है। बहुसंस्कृतिवाद के उपमान में तुलनात्मकता का दायरा भी बढ़ा है।

**तुलनात्मक साहित्य : भारतीय दृष्टिकोण :**

तुलनात्मक अध्ययन प्राचीन काल से चला आ रहा है। संस्कृत में कालिदास और दंडी की तुलना हिन्दी

में सूर, सूर तुलसी शशि, देव और बिहारी की तुलना की जनश्रुतियाँ प्रसिद्ध है। आनंदवर्धन और कुंतक ने भी संस्कृत और प्राकृत्त के कवि नाटककारों का सूक्ष्म गहन तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया है। देव और बिहारी की तुलना को लेकर कई पेतरेंबाजियाँ हुई, उनसे हम पूर्ण परिचित हैं। पर किसी ने इन सारे प्रपंचों को तुलनात्मक अध्ययन जैसी गुरु विशिष्ट संज्ञा से अभिहित किया।" पर अब यह शब्द एक विशिष्ट अर्थ से समन्वित हो गया है। शोधार्थियों ने तुलनात्मक शब्द को अपने क्षेत्र में लाकर एक नये रंग में रंग दिया है। यह शब्द इतना व्यापक होता जा रहा है कि तुलनात्मक शोध की एक नयी पलटन खड़ी होने जा रही है। बीसवीं सदी में तुलनात्मक दृष्टि प्राप्त होते ही भारतीय विद्वानों का संज्ञान तुलना के लिए भारतीय भाषाओं के स्थान पर अंग्रेजी साहित्य के प्रति ही केन्द्रित रहा। बंकिमचन्द्र ने 'शक्तिला मिरांडा और डेस डोमना' शीर्षक निबंध लिखा था तथा बावरन और शैली की कविताओं के साथ वैदिक ऋचाओं की तुलना की थी जिसके फलस्वरूप तुलनात्मक अध्ययन का प्रसार हुआ।

यह सर्व विदित है कि यूरोपीय विद्वानों ने सर्वप्रथम भारतीय तुलनात्मक साहित्य की नींव रखी। रावर्ट काल्डवल ने तुलनात्मक व्याकरण लिखा तो अकवर्ट वेचर ने संस्कृत ड्रामा पर युनान प्रभाव की छानबीन की। मेक्सचूलर ने संस्कृत और यूनानी साहित्य की बात की और इससे विश्व साहित्य के प्रति एक स्वस्थ दृष्टिकोण का प्रसार हुआ। "भारत अनेक भाषाओ का विशाल देश है और ग्रण व परिमाण में सभी का अपना समृद्ध साहित्य है। भारतीय भाषाओं का संकलित साहित्य संपूर्ण यूरोपीय वाडमय से कम नहीं है। इन सभी में अपनी-अपनी विशिष्ट विभूतियाँ हैं।"[५]

**तुलनात्मक साहित्य : पाश्चात्य दृष्टिकोण :**

अफ्रीकी स्कूल के विद्वान् तुलनात्मक साहित्य के अंतर्गत ज्ञान के विविध क्षेत्रों के बीच साहित्य के संबंधों को स्वीकार करने के साथ-साथ साहित्य लोचन को भी तुलनात्मक अध्ययन का महत्त्वपूर्ण अंग स्वीकार करते हैं। 'पोजनेट' ने अपने 'कम्पेरेटिव लिटरेचर' ग्रंथ में यह प्रगट किया कि तुलना करना मनीषी और समीक्षक का परंपरागत कार्य रहा है। अमरीकी तुलनात्मक का स्वरूप निर्धारण रेनेवेलेक, हेरी वेलल, हेरी लेविन जैसे विद्वानों द्वारा किया गया है। इसलिए वह समानताओं मूल अभिप्रायों, शैलीगत तथ्यों काव्य विधाओं आंदोलनों और परंपराओं के तुलनात्मक अन्वेषण को प्रोत्साहन देता हुआ, इस प्रक्रिया में साहित्यिक रचना के कलात्मक वैशिष्ट्य का उद्घाटन करता है।

शिक्षातंत्र में तुलनात्मक साहित्य का प्रवेश सबसे पहले अमरीका के विश्वविद्यालयों में बीसवीं सदी में हुआ। इस सबसे हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि तुलनात्मक साहित्य एक स्वतंत्र विषय है, जिसमें विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्यों की एक संपूर्णता के रूप में व्यापक पहचान की ओर अधिक संभावना बनती है। यह काम विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्यों की मानवीय ज्ञान और विशेष रूप से कलात्मक तथा वैचारिक क्षेत्रों के साथ तुलना से ही संभव हो सकता है।

**तुलनात्मक साहित्य की परिभाषाएँ :**

यह सनातन सत्य है कि तुलनात्मक अध्ययन आज के युग की माँग है। आज की अति आवश्यक संकल्पना है। 'तुलनात्मक' शब्द को समझने के लिए, उसकी परिभाषा जान लेना जरूरी है। सभी विद्वानों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से तुलनात्मक अध्ययन की परिभाषा दी है। जो निम्नस्थ है -

1. "तुलनात्मक साहित्य अति आवश्यक है, अर्थात् निरनिराले साहित्य का एक दूसरे से जो संबंध होता है उसका अध्ययन ही होता है।"

- पर्पाल वैन[६]

२. "साहित्यिक विकास के सामान्य सिद्धातों का अध्ययन निश्चय ही तुलनात्मक साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है।"

- पासनेट[७]

३. "तुलनात्मक साहित्य' में विभिन्न भाषाओं में लिखित साहित्यों अथवा उसके संक्षिप्त घटकों की साहित्यिक तुलना होती है और यही उसका आचार तत्व है।"

- कलारव स्कार[८]

४. "एक की अपेक्षा अधिक साहित्यों का तुलना की सहायता से किया गया अध्ययन।"

- वसंत बापट[९]

५. "तुलनात्मक साहित्य एक प्रकार का अतः साहित्यिक अध्ययन है जो अनेक भाषाओं को आधार मानकर चलती है जिसका उद्देश्य होता है-अनेकता में एकता का संधान।"

- डॉ. नगेन्द्र[१०]

६. "तुलनात्मक साहित्य विभिन्न साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन है तथा साहित्य के साथ ज्ञान के दूसरे क्षेत्रों का भी तुलनात्मक अध्ययन है।"

- इद्रनाथ चौधुरी[११]

७. "तुलना और विश्लेषण आलोचक के प्रमुख औज़ार हैं। मूल्यांकन परक आलोचना की श्रेष्ठता को मलने के लिए तुलनात्मक पद्धति का लाभउठाती है।"

- टी.एस. एलियट[१२]

संक्षेप में तुलनात्मक साहित्य एक प्रकार का अतः साहित्यिक अध्ययन है जो अनेक भाषाओं को आधार मानकर चलता है और जिसका उद्देश्य होता है अनेकता में एकता का संधान। रवीन्द्रनाथ टैगोर की विश्व साहित्य विषयक अवधारणा के अनुसार विश्व साहित्य, सार्वभौम दृष्टिकोण और तुलनात्मक साहित्य का मानो लक्ष्य एक ही है।

**तुलनात्मक साहित्य की समस्याएँ :**

भारतीय समाज की विविधता तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्र में कई प्रकार की कठिनाईयाँ प्रस्तुत करती है। एक प्रकार से यह चूनौती भरा विषय है। पर सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सही संवाद के लिए यह अनिवार्य है कि इस दिशा में निरंतर सक्रियता बनी रहे। पहले धर्म एक माध्यम था जो भारत को किसी सीमा तक जोडता-गूंथता था। मध्यकालीन आंदोलन पूरे देश की चेतना पर अपना प्रभाव छोड़ता है और सभी भाषाओं में एक नयी रचनात्मक सक्रियता दिखायी देती है। धर्म के बंधन शिथिल होने पर सामंती समाज किसी ऐसे विकल्प की खोज नहीं कर पाया जिसके सहारे भारतीय मानस को बांधा जा सके। परिणाम यह होता है कि राजनीतिक पराभव के साथ, समाज में सांस्कृतिक विशृंखलता भी आती है। भारतीय नवजागरण और स्वतंत्रता संघर्ष में यह प्रयत्न किया गया कि सांस्कृतिक संवाद स्थापित हो। इसके लिए स्वतंत्रता की भावना के साथ राष्ट्रभावना की बात भी की गयी। तुलनात्मक अनुसंधान कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। यहाँ हम उस सामाजिक सांस्कृतिक चेतना को इतिहास की पीठिका में देखते-समझते हैं, जिसने पूरे देश को प्रभावित किया। पर स्थानीय स्थितियों की भी उसमें भूमिका है। आज तुलनात्मक साहित्य केवल अध्ययन की एक विधि या पद्धति मात्र नहीं, यह साहित्य की एक स्वतंत्र अवधारणा भी है। इस दृष्टि से इस क्षेत्र से सम्बन्धित मुख्य समस्याओं पर विचार करना आवश्यक है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में यह अध्ययन अध्यापन का एक विषय बन गया है। लेकिन इस विषय का कथा स्वरूप निश्चित किया गया है? तुलनात्मक साहित्य की संकल्पना क्या है? क्या इसका एक ठोस ढांचा तैयार किया गया है ? तुलनात्मक साहित्य के अन्तर्गत किन-किन साहित्यों को लिया गया है।

कुल मिलाकर तुलनात्मक अध्ययन प्रभाववादी प्रयत्न नहीं है। वह एक आलोचनात्मक प्रक्रिया है, और इस दृष्टि से हर प्रकार के सरलीकरण से बचना होगा। "आज तुलनात्मक साहित्य केवल अध्ययन की एक विधि या पद्धति भाग नहीं यह साहित्य की एक स्वतंत्र अवधारणा भी है। इस दृष्टि से इस क्षेत्र में से सम्बन्धित मुख्य समस्याओं पर विचार करना आवश्यक है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में यह अध्ययन- अध्यापन का एक विषय बन गया है। इसीलिए तुलनात्मक साहित्य के सन्दर्भ में सबसे पहले उभर आनेवाली समस्या विविध भाषा साहित्य में पांडित्य का अभाव है।"[१३] तुलनात्मक अध्ययन के लिए दोनों साहित्यों में गहरा ज्ञान आवश्यक है। इसके अभाव में जो तुलना की जाती है वह एक-एक व्यक्ति की भाषणकला को देखकर उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को आंकने के समान है।

तुलनात्मक साहित्य में विभिन्न भाषायी साहित्य के बीच में जो दूरी है उसे निपटाने के लिए अनुवाद महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। विभिन्न भाषाओं के बीच में अनुवाद कार्य सम्पन्न होने पर यह तुलना के लिए सहायक बन जाएगा। आज संसार की दूरी सहज कम हो रही है। इस कारण भाषाओं और साहित्यों की दूरी भी कम होती जा रही है। विभिन्न भाषाओं के साहित्यिक ग्रंथों के अनुवाद तथा तुलना अत्यंत आवश्यक सिद्ध हो रहें हैं।

**तुलनात्मक साहित्य का महत्त्व :**

भारत में तुलनात्मक साहित्य को स्वतंत्र विधा का रूप नहीं मिला है। आज तुलनात्मक अध्ययन की महती आवश्यकता है। आज की अति आवश्यक संकल्पना है। हम हमारी आदिम व्यवस्था साथ लेकर आजतक के मानव जीवन के क्रमिक विकास को देखे तो यह सहज स्पष्ट हो जाता है कि उस विकास में तुलनात्मक

दृष्टि का विशेष योगदान रहा है। तुलनात्मक वृत्ति के कारण ही मनुष्य का शारीरिक एवं बौद्धिक विकास हुआ है।

तुलनात्मक साहित्य मात्र साम्य-वैषम्य प्रगट करने वाली तुलना पर नहीं है। यह तो साहित्य विशेष को पृष्ठभूमि प्रदान करनेवाली, सामूहिक प्रवृत्तियों के संधान द्वारा मानवीय कार्य-कलाप के अन्य क्षेत्रों के पारस्परिक संबंध से अवगत भी कराती है। वस्तुतः सर्वोत्कृष्ट साहित्य अर्थात् गौरव ग्रंथों से देशकाल से परे तुलनात्मक अध्ययन द्वारा कुछ ऐसी विशिष्टताएँ व संबंध सूत्र प्रगट होते हैं जिन पर हमारा ध्यान ही नहीं जाता। इन गौरव-ग्रंथों पर पड़नेवाले देशज प्रभाव, उपलब्धियों, प्रतिक्रिया, व्यक्तिगत दृष्टिकोण आदि का अध्ययन वैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा किया जाता है। तुलनात्मक अध्ययन का महत्त्व निम्नांकित बातों से भी स्पष्ट किया जा सकता है-

१. तुलनात्मक अध्ययनों के द्वारा ऐसी विशेषताएँ उजागर होती है जो सामान्य अध्ययन से संभव नहीं है।

२. नवीन सन्दर्भ नवीन रूप में प्रकट होते हैं।

३. भाषा और साहित्य का गहन संबंध स्थापित होता है।

४. पारस्परिक आदान-प्रदान द्वारा भाषाओं और साहित्य के दायरे विस्तृत होते हैं।

५. तुलनात्मक अध्ययन पूर्वग्रहों से मुक्ति दिलाता है।

६. एक ही देश की विविध इकाइयों को परस्पर मिल जाने को प्रोत्साहन मिलता है।"[१४]

तुलना के बिना अनुसंधान पूर्ण नहीं हो पाता। तुलनात्मक अनुसंधान द्वारा कृति या कृतिकार में सत्यान्वेषण करके निष्कर्षो का नवनीत निकाला जाता है। अतः तुलनात्मक अनुसंधान मनुष्य के विचारों, भावो और सामाजिक चेतना का दर्पण है। साहित्य के सम्यक अनुशीलन में तुलनात्मक दृष्टि महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।[१५] आज साहित्य के क्षेत्र में तुलनात्मक आधारों को अपनाने की विशेष आवश्यकता महसूस की जाती है। आज यह कार्य इतना कठिन नहीं है।

आज आसानी से हम जिस प्रकार की जानकारी हासिल करना चाहें कर सकतें है। किसी दो भाषा-साहित्य मे जो कुछ भी हो रहा है, अपने साथ तुलनात्मक अभिगम से यह निश्चित किया जासकता है कि हम कहा खड़े हैं। किसी दो भाषा-साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन से व्यापक दृष्टिकोण पैदा होता है।"[१६]

**उपसंहार :**

आज की यह आवश्यकता है कि विभिन्न भाषाओं में विकसित भारतीय भाषा-संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन हो, जिनसे भारतीय संस्कृति का एक व्यापक रूप प्रस्थापित हो सकता है एवं स्थानीय, प्रांतीय सीमाओं से उपर उठकर विश्व साहित्य की विभावना बन सकती है। भारत बहुभाषा-भाषी देश है। जिसमें विभिन्न भाषा-साहित्य के बीच का तुलनात्मक अभ्यास राष्ट्रीयता के परिप्रेक्ष में विशेष कारगर सिद्ध हो सकता है। तुलनात्मक पद्धति ही साहित्य परिशीलन की सच्ची पद्धति है। जैसे सामना होने पर ही वीरों की वीरता का परिचय मिलता है, वैसे तुलना करने से ही जान पड़ता है कि विषय विशेष का वर्णन करने में कौन-कहा तक समर्थ हुआ है। संक्षेप में तुलनात्मक अध्ययन चाहे तो पत्थर को छूकर, सोना बना दें-यह कोई कम महत्त्व की बात नहीं है।

**सन्दर्भ सूची :**

1. सं.गोस्वामी, योगेन्द्र, साहित्य परिक्रमा (पत्रिका), अखिल भारतीय साहित्य परिषद दिल्ली, सितम्बर २०००, पृ. १०
2. आनंद, मधुकर, निबन्ध सौरभ-शेष, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, १९९६, पृ. १३
3. डॉ.देवराज, उपाध्याय, साहित्य एवं शोध : कुछ समस्याएँ, अनुपम प्रकाशन जयपुर, १९७०, पृ. १५१
4. पाटिल, आनंद, तुलनात्मक साहित्य, भारतीय बुक कोर्पोरेशन दिल्ली, २००६, पृ. ११
5. चौधरी, इंद्रनाथ, तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, नेशनल पब्लिसिंग हाऊस दिल्ली, १९८३, पृ. १३
6. श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ, तुलनात्मक साहित्य समाकलन, अंतराष्ट्रीय साहित्य मंच दिल्ली, १९८४, पृ. ६०
7. पाटिल, आनंद, साहित्यिक साहित्य नए सिद्धांत-उपयोजना भारतीय बुक कोर्पोरेशन दिल्ली, २००६, पृ.१३
8. बोरा, डॉ.राजमल, तुलनात्मक अध्ययन : स्वरूप-समस्याएँ, वाणी प्रकाशन दिल्ली, २००४ से उद्धृत
9. वही
10. बापट, वसंत, तौलनिक साहित्याभ्यास, मौज प्रकाशन मुंबई, १९९०, पृ. ४८

11. सं./डॉ.राजूरकर, बोरा, डॉ.राजमल, तुलनात्मक अध्ययन, वाणी प्रकाशन दिल्ली, १९९०, पृ. १५ से उद्धृत
12. चौधरी, इंद्रनाथ, तुलनात्मक साहित्य, नेशनल पब्लिसिंग हाऊस, दिल्ली, १९८३, पृ. १३
13. सं./डॉ.राजूरकर, बोरा, डॉ.राजमल, तुलनात्मक अध्ययन, वाणी प्रकाशन दिल्ली, १९९०, पृ. १५ से उद्धृत
14. डॉ. के.वनजा, तुलना और तुलना, जवाहर पुस्तकालय मथुरा, २००१, पृ. ११
15. डॉ.विजयपालसिंह, हिन्दी अनुसंधान, राजपाल एंड सन्स दिल्ली, १९७८, पृ. ४० से उद्धृत
16. सं. ठक्कर, एच.टी., 'तीर्थदक' (डॉ.गिरीश त्रिवेदी अभिनन्दन ग्रन्थ), लोकार्पण समिति राजकोट-२००८, पृ.१०७ से उद्धृत